Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

हिन्दी गद्य साहित्य के विकास क्रम

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

हिन्दी गद्य साहित्य के विकास क्रम

Dr. Randhir Singh

Asst. Professor (Seth Tek Chand College of Education) Rattan Dera (Kurukshetra)

----------X----------

हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल के आगमन के साथ ही खड़ी बोली गद्य का उदय हुआ। खड़ी बोली को गद्य साहित्य में प्रतिष्ठित करने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं। भारतेन्दु जी आधुनिक खड़ी बोली गद्य के जन्मदाता हैं। भारतेन्दु जी से प्रारम्भ होकर खड़ी बोली का गद्य साहित्य इस समय उन्नति के चरम शिखर पर आसीन है। हिन्दी गद्य के विकास को हम

निम्नांकित युगों में विभाजित करके सरलता से समझ सकते हैं–

(1) **प्रथम चरण**– भारतेन्दु युग (सन् 1857 से 1900 तक)।

(2) **द्वितीय चरण**– द्विवेदी युग (सन् 1900 से 1918 तक)।

(3) **तृतीय चरण**– शुक्ल प्रेमचन्द–प्रसाद युग (सन् 1918 से 1938 तक)।

(4) **चतुर्थ चरण**– प्रगतिवादी युग (सन् 1938 से 1947 तक)।

(5) **पंचम चरण–** स्वातन्त्रोत्तर युग (1947 से वर्तमान तक)।

प्रथम विकास काल (भारतेन्दु युग सन् 1857 से 1900 तक)

भारतेन्दु युगीन हिन्दी गद्य

जिस समय खड़ी बोली गद्य अपने प्रारम्भिक रूप में थी, उस समय हिन्दी के सौभाग्य से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने साहित्य के क्षेत्र में प्रवेष किया। उन्होंने राजा शिवप्रसाद तथा राजा लक्ष्मण सिंह की आपस में विरोधी ६ षैलियों में समन्वय स्थापित किया और मध्यम मार्ग अपनाया। इन्होंने दो शैलियों में रचनाएं की।

बोलचाल की शुद्ध हिन्दी षैली– इसमें साधारण तथा सरल विषयों पर लिखा गया है। इस काल में हिन्दी के प्रचार में जिन पत्र–पत्रिकाओं ने विशेष योग दिया, उनमें उदन्त मार्तण्ड कवि वचन सुधा हरिश्चन्द्र मैगजीन अग्रणी हैं।

इस समय हिन्दी गद्य की सर्वांगीण प्रगति हुई और उसमें उपन्यास कहानी, नाटक,

निबन्ध, आलोचना, जीवनी आदि विधाओं में अनूदित तथा मौलिक रचनाएं लिखी गयीं।

भारतेन्दु मण्डल

बहुमुखी प्रतिभा के धनी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने प्रभूत साहित्य रचा एवं अनेक साहित्यकारों को अपनी प्रतिभा से प्रभावित एवं प्रेरित किया। इन लेखकों में बालकृष्ण भट्ट प्रतापनारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन राधाचरण गोस्वामी एवं रायकृष्णदास प्रमुख हैं। इन्होंने हिन्दी–साहित्य को समृद्ध बनाया। यही भारतेन्दु का समकालीन एवं सहयोगी साहित्यकार मण्डल भारतेन्दु मण्डल के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

भारतेन्दु युग

भारतेन्दूजी का जन्म सन् 1850 एवं मृत्यु 1885 में हई थी, हिन्दी साहित्य के प्रतिभावान् लेखक होने के नाते इनका प्रभाव अन्य साहित्यकारों पर बना रहा, विशेष रू‍प से सन् 1868 से लेकर 1900 तक के सभी साहित्यकार किसी न किसी रू‍प में उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। हिन्दी साहित्य में यह समय भारतेन्दु युग के नाम से अभिहित किया जाता है।

भारतेन्दु कालीन कथा

कथा साहित्य के अन्तर्गत उपन्यास एवं कहानी को ग्रहण किया जाता है। भारतेन्दु काल मं इन दोनां का लेखन प्रारम्भ हुआ, जिनक पृथक्–पृथक् विवेचन निम्नलिखित है।

उपन्यास– भारतेन्दु काल में हिन्दी की उप विधा का विकास हुआ। पं. बालकृष्ण भट्ट का सौ अजान एक सुजान इस समय का उपदेश प्रधान आदर्शवादी उपन्यास है। इसमें उस परिपूर्ण श्यामा–स्वप्न उपन्यास काव्य–सौन्दर्य से भरा हुआ है। अम्बिकादत्त व्यास का आष्चय वृत्तान्त बालकृष्ण भट्ट का नूतन ब्रहमचारी और राधाकृष्णदास का निःसहाय हिन्दू इस काल के अन्य उपन्यास हैं।

कहानी– कहानी का क्रमबद्ध विकास भारतेन्दु युग से होता है। इस युग में केवल बंगला तथा अंग्रेजी कहानियों के अनुवाद हुए। मौलिक रू‍प में जो कहानियां लिखी गईं, उन पर इनका प्रभाव दिखाई देता है। भारतेन्दु जी ने एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न नामक कहानी लिखी, जिसे अधिकांष विद्वान हिन्दी की प्रथम साहित्यिक तथा मौलिक कहानी मानते हैं।

सरस्वती पत्रिका के प्रकाषन के साथ–साथ हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियां प्रकाष में आयीं। सरस्वती के प्रारम्भिक कहानी लेखकों में किशोरीलाल गोस्वामी, पार्वतीनन्दन, बंग महिला, रामचन्द्र शुक्ल, डॉ0 भगवानदास आदि प्रमुख हैं।

भारतेन्दु काल में कथा–साहित्य के अतिरिक्त कौन–सी अन्य विधाओं का उदय

कथा साहित्य के अतिरिक्त भारतेन्दु काल में नाटक, निबन्ध तथा समालोचना विधाओं का भी जन्म हुआ, जिनका विवेचनात्मक परिचय निम्नलिखित है–

www.ignited.in

नाटक– इस युग में मौलिक तथा अनूदित दोनों ही प्रकार के नाटक लिखे गये। भारतेन्दु के मौलिक नाटकों में चन्द्रावली, नीलदेवी, भारत–दुर्दशा प्रमुख हैं। अनूदित नाटकों में कुछ बंगला से और कुछ संस्कृत से अनूदित हैं। इस काल में प्रतापनारायण मिश्र ने गौ संकट, कलि प्रभाव, ज्वारी–ख्वारी, हमीर–हठ, राधाकृष्णदास ने महारानी पद्मावती, महाराणा पताप, दुखिनी वाला, बाबू गोकुलचन्द ने बूढ़े मुंह मुहासे, लोग चले तमाषे, आदि नाटक लिखे। श्री निवास दास, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, अम्बिकादत्त व्यास आदि इस काल के अन्य नाटककार हैं।

निबन्ध– हिन्दी में निबन्ध साहित्य का प्रारम्भ भारतेन्दु युग की पत्र–पत्रिकाओं से होता है। प्रायः तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं में उनके सम्पादक उस समय की सांस्कृतिक तथा राजनीतिक समस्याओं पर लेख लिखा करते थे। भारतेन्दु ने सर्वप्रथम कवि वचन सुधा तथा हरिश्चन्द्र मैगजीन में साहित्यिक ढंग से निबन्ध लिखे। इसके बाद पं. प्रतापनारायण मिश्र तथा पं. बालकृष्ण भट्ट तथा बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन ने क्रमषः हिन्दी प्रदीप ब्राहमण तथा आनन्द कादम्बिनी नामक पत्रिकाओं में निबन्ध लिखे, जिन्हें साहित्यिक कोटि के निबन्ध कहा जा सकता ह। इसी समय पं. बालकृष्ण भट्ट ने विनोदपूर्ण तथा गम्भीर षैली में विवेचनात्मक, आलोचनात्मक तथा भावात्मक निबन लिखे। बालमुकुन्द गुप्त, प्रेमघन, अम्बिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी इस युग के अन्य प्रसिद्ध निबन्ध लेखक हैं।

आलोचना– भारतेन्दु युग में गद्य के अन्य अंगों के साथ–साथ आलोचना विधा भी नया रूप धाण कर आगे बढ़ी। उसके स्वरूप और प्रकार में नये तत्वों का समावेश हुआ। साहित्यिक विवेचना में बौद्धिकता की प्रधानता हो गयी। उपन्यास, कहानी, निबन्ध, नाटक आदि के साथ–साथ उनकी आलोचनाएं भी लिखी जाने लगीं। इस नवीन आलोचना के विकास में तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं कस प्रमुख हाथ रहा। इस समीक्षा के प्रवर्त्तकों में भारतेन्दु, प्रेमघन, बालकृष्ण भट्ट, श्री निवास दास, बालमुकुन्द गुप्त, प्रतापनारायण मिश्र, गंगाप्रसाद अगिनहोत्री आदि प्रसिद्ध हैं। आनन्द कादम्बिनी नामक पत्रिका के द्वारा प्रेमघन ने पुस्तकों की विस्तृत तथा गम्भीर आलोचना प्रारम्भ की। इन्होंने श्री निवास दास के संयोगिता स्वयंवर नाटक की बड़ी विशद् और कड़ी आलोचना लिखकर प्रकशित की।

द्वितीय विकास काल (द्विवेदी युग अथवा जागरण सुधार युग सन् 1900 से 1918 तक)

द्विवेदी युगीन हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

विकास दृष्टि से द्विवेदी युग को हिन्दी गद्य का किशोर काल कहा जाता है। भारतेन्दु काल में विभिन्न प्रकार की रचनाओं का लेखन तो आरम्भ हो गया था, किन्तु भाषा अपरिमार्जित, भावों को पूर्णतया व्यक्त करने में अशक्त तथा व्याकरण के नियमों के प्रतिकूल थी। सर्वप्रथम पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी का ध्यान भाषा की इस कमी की ओर गया और इनकी प्रयत्नों से भाषा की यह कमी दूर हो गयी।

द्विवेदी जी ने सरस्वती नामक मासिक पत्रिका में लेख लिखकर अशुद्ध भाषा मं लिखने वालों की खूब खबर ली और उन्हें शुद्ध तथा परिमार्जित भाषा लिखने के लिए प्रेरित किया।

इन्होंने परिचयात्मक, आलोचनात्मक तथा गवेषाणात्मक शैलियों में अने गम्भीर विषयों पर निबन्ध लिखे। इस काल के लेखकों में पं. माधव प्रसाद मिश्र, चन्दधर शर्मा, गुलेरी, बालमुकुन्द गुप्त, डॉ0 श्यामसुन्दर दास, पद्मसिंह शर्मा, मिश्रबन्धु आदि प्रसद्धि हैं। इन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, जीवनी, आलोचना आदि लिखकर हिन्दी के गद्य साहित्य को समृद्ध किया। इस प्रकार द्विवेदी युग हिन्दी गद्य विकास के पथ पर अग्रसर हुआ।

द्विवेदी युगीन गद्य की कछ विशेषताएं

द्विवेदी युगीन गद्य की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

(1) द्विवेदी युगीन गद्य में शुद्ध व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग किया गया है।

(2) इस युग के गद्य में विषयों की विविधता है।

(3) इस युग के गद्य में चिंतन की मौलिकता, विश्लेषण की गम्भीरता, सूक्ष्म निरीक्षण तथा सरसता परिलक्षित होती है।

द्विवेदी युगीन हिन्दी गद्य की विधाओं

द्विवेदी युग में हिन्दी गद्य साहित्य में निम्नलिखित विधाओं पर लिखा गया–

उपन्यास– भारतेन्दु युग में उपन्यासों के अनुवाद तो हुए, किन्तु कोइ मौलिक उपन्यास नहीं लिखा गया। इस युग में बाबू देवकीनन्दन खत्री ने चन्द्रकांता, चन्द्रकान्ता–सन्तति और भूतनाथ नामक उपन्यास लिखे, इनमें अय्यारी और तिलस्मी घटनाओं की ही प्रधानता रही। बाबू गोपालराम गहमरी, हरिकृष्ण प्रेमी, पं. किषोरीलाल गोस्वामी, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध इस युग के अन्य प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं। इस युग के उपन्यासों में घअनाओं की प्रधानता और चमत्कार का समावेष है।

कहानी– भारतेन्दु काल में कहानी साहित्य का प्रारमी हो चुका था, किन्तु उसका विकास सरस्वती पत्रिका के साथ–साथ प्रारम्भ हुआ। किषोरीलाल गोस्वामी पार्वतीनन्दन, भगवानदास आदि इस युग के प्रसिद्ध कहानीकार हैं। इस युग की कहानियों में उपदेशात्मक और आदर्ष प्रतिष्ठाा का विषेष ध्यान रखा जाता था।

नाटक– इस युग में नाटकों के विषय में र्प्याप्त विविधता आयी और पं. किषोरीलाल गोस्वामी, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, बल्देवप्रसाद मिश्र आदि ने तरह–तरह के नाटक लिखे। इन लोगों ने इतिहास, बाल–विवाह, वृद्ध–विवाह, मुकदमेबाजी आदि से सम्बन्धित विषयां पर नाटकां की रचना की। रंगमंचीय नाटकों के अतिरिक्त पाठ्य–नाटकों का भी प्रचलन प्रारम्भ हुआ।

निबन्ध– इस युग में द्विवेदी जी के प्रयत्नों से निबन्धों के विषयों और शैलियों में र्प्याप्त विविधता आयी, निबन्धां में प्रौढ़ता के दर्शन होने लगे और ऐतिहासिक, पुरातत्व सम्बनी तथा आलोचनात्मक निबन्ध लिखे गये। स्वयं द्विवेदी जी ने विवेचनात्मक, गवेषणात्मक और आलोचनात्मक ढंग से निबन्ध लिखे गये। बाबू श्यामसन्दरदास, बाबू गुलाबराय, मिश्रबन्धु सरदार पूर्ण सिंह इस युग के प्रसद्धि निबन्धकार हैं। इन लेखकों के प्रयत्नों से निबन्ध का स्वरूप स्थिर हुआ और उसमें नवीन शैलियों का भी समावेश हुआ।

आलोचना– इस युग में आलोचना का पुस्तक रूप आरम्भ द्विवेदी जी द्वारा लिखित कालिदास की समालोचना से हुआ। द्विवेदी जी ने अपनी आलोचनात्मक पुस्तक में काव्य भाषा और व्याकरण के गुण–दोषों का विवेचन किया है। द्विवेदीकालीन आलोचना के विकास में सरस्वती ओर नागरी प्राचारिणी पत्रिका का विशेष

www.ignited.in

योगदान रहा। इस युग में गवेषणात्मक और सैद्धान्तिक आलोचना का विकास हुआ। बाबू श्यामसुन्दरदास, बाबू गुलाबराय, जगन्नाथ दास रत्नाकर आदि इस युग के प्रसिद्ध आलोचक हैं। इस काल की आलोचनाओं में तुलसी, सूर, बिहारी आदि की काव्यगत विशेषताओं पर प्र्याप्त प्रकाष डाला गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि द्विवेदी युग में अनेक प्रकार की गद्य–विधाएं विकसित हुई। भाषा का व्याकरण–सम्मत एवं परिमार्जित रूप सामने आया तथा विविध लेखन–शैलियों का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। अभिनेय नाटकों के साथ पाठ्य नाटकों का भी श्रीगणेश हुआ।

हिन्दी गद्य–लेखन में गतिशीलता का प्रारम्भ हुआ तथा भाषा–शैली का परिष्कृत रूप सामने आया।

तृतीय विकास काल (षुक्ल, प्रेमचन्द तथा प्रसाद युग सन् 1918 से 1938 तक)

यह काल देश में राजनीतिक उथल–पुथल और जन–जागरण का काल था, अतएव इस काल के साहित्य में देश–भक्ति का स्वर ही विशेष रूप से मुखरित हुआ। द्विवेदी जी के प्रयत्नों से भाषा और साहित्य का परिष्कार हो चुका था और साहित्य आदर्शवाद की ओर उन्मुख होकर इतिवृत्तात्मक हो चुका था। उसमं कलात्मकता और नवीनता का अभाव था। इस अभाव को दूर करने में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचन्द, अध्यापक पूर्णसिंह और जयशंकर प्रसाद का नाम उल्लेखनीय है।

इस काल में भाषा का स्वरूप स्थिर हो गया और वह नवीन–नवीन भावों को व्यक्त करने में समर्थ हुई। कलापक्ष और भावपक्ष का समुचित सम्मिश्रण दृष्टिगोचर होने लगा। इस युग में उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध तथा आलोचना आदि साहित्य की सभी विधाओं के लेखन में प्रौढ़ता के दर्शन होते हैं

छायावादी युग में विकसित साहित्य के विविध अंग

छायावादी युग में हिन्दी गद्य की निम्नलिखित विधाओं (साहित्य के अंगों) पर पर्याप्त लिखा गया है।

आलोचना और निबन्ध– शुक्ल जी ने अपनी आलोचनाओं और निबन्धों द्वारा हिन्दी गद्य साहित्य को एक नवीन मोड़ दिया ओर द्विवेदी काल की व्यास षैलीके स्थान पर समास षैलीस्थापित की। हिन्दी मं शुक्ल जी ने ही वैज्ञानिक ढंग की व्याख्यात्मक समालोचनाओं को आरम्भ किया। लज्जा, क्रोध, श्रद्धा, आदि मनोवाकिरों पर लिखे हुए इनके मनोवैज्ञानिक निबन्ध अत्यन्त उच्चकोटि के हैं। निबन्ध तथा आलोचनाओं के क्षेत्र में आज भी प्रायः शुक्ल जी का अनुसरण हो रहा है। डॉ0 श्यामसुन्दर दास, बाबू गुलाबराय, नन्ददुलाने वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, वियोगी हरि, जैनेन्द्र कुमार आदि इस काल के अन्य प्रसिद्ध निबन्ध तथा समालोचक हैं।

उपन्यास तथा कहानी– उपन्यास तथा कहानी– क्षेत्र में प्रेमचन्द जी अलौकिक प्रतिभा लेकर अवतीर्ण हुए। उन्होंने अपनी रचनाओं को सरल तथा व्यावहारिक भाषा में लिखकर हिन्दी गद्य को जन–साधारण के समीप ला दिया। प्रेमाश्रम, गवन, गोदान, रंगभूमि आदि उपन्यासों के द्वारा प्रेमचन्द जी ने भाषा, भाव एवं अभिव्यंजना षैलीके क्रान्ति उत्पन्न कर दी। हिन्दी साहित्य जगत ने उन्हें उपन्यास–सम्राट कहकर सम्मानित किया। सुदर्शन, काशक, अज्ञेय, जैनेन्द्र कुमार, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, वृन्दावनलाल वर्मा आदि इस युग के प्रसिद्ध कहानीकार तथा उपन्यासकार हैं।

नाटक– नाटक के क्षेत्र में श्री जयशंकर प्रसाद नवीन षैलीके जन्मदाता माने जाते हैं। अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी आदि नाटकों में भारतीय संस्कृति तथा प्राचीन भारतीय इतिहास का अद्भुत समन्वय है। हरिकृष्ण प्रेमी ने मुगलकालीन और उदयशंकर भट्ट ने पौराणिक नाटकों को लिखकर हिन्दी की श्रीवृद्धि की है। लक्ष्मीनारायण मिश्र, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, उपेन्द्रनाथ अश्क, सेठ गोविन्ददास आदि युग के अन्य प्रसद्धि नाटककार हैं।

हिन्दी गद्य के विकास में डॉ0 श्यामसुन्दरदास

श्री श्यामसुन्दरदास द्विवेदी युगीन मूधन्य लेखकों में से एक हैं। हिन्दी गद्य के विकास में आपका योगदान आचार्य द्विवेदी की भांति ही था। आपके योगदान का मूल्यांकन हम निम्नलिखित ढंग से कर सकते हैं।

उच्च स्तरीय ग्रन्थ प्रणयन– आपने उच्च कक्षाओं हेतु पाठ्य–पुस्तकों के रूप में उच्च स्तरीय गद्य लिखा, आपने भाषा–विज्ञान एवं साहित्यालोचन जैसे गन्थ देकर गद्य साहित्य के अभाव को दूर किया। हिन्दी शब्द सागर का सम्पादन कर उच्च स्तरीय ग्रन्थों का प्रणयन किया।

वैज्ञानिक समालोचना– वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आपने समालोचना–विधा प्रारमी की, छात्रों एवं लेखकों का मार्गदर्शन किया।

उच्च कक्षाओं में हिन्दी– श्री श्यामसुन्दर दास ने अपने छात्र जीवन में ही काशी में नागरी प्राचारिणी सभा की स्थापना की तथा इसके माध्यम से हिन्दी की सेवा की।

इस प्रकार हम देखते हैं कि डॉ0 श्यामसुन्दरदास ने समीक्षा एवं शोध के क्षेत्र में हिन्दी साहित्य की अपूर्व सेवा की है। उन्हीं के प्रदर्शित मार्ग पर श्री शुक्ल से लेकर डॉ0 नगेन्द्र तक यह विधा सुविकसित हुई है।

चतुर्थ विकास काल (प्रगतिवादी युग सन् 1938)

प्रगतिवादी युग

अथवा

छायावादोत्तर हिन्दी गद्य साहित्य की विशेषताएं

ईसा की बीसवीं सदी के मध्य भाग में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर विशेष रूप से पड़ा। उसने साहित्य की धारा को नवीन मोड़ दिया। फलस्वयप साहित्य में शोषित तथा दलित किसानों और मजदूरों के प्रति सहानुभूति–प्रदर्शनप पूंजीपतियों, अधिकारियों, साहूकारों और मिल मालिकों के अत्याचारों की आलोचना, राजनीति, समाज, संस्कृति तथा

अर्थव्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की मांग आदि साहित्यिक रचनाओं के प्रमुख विषय रहे।

मार्क्स के सिद्धान्त से प्रभावित विद्वान इस नवीन दृष्टिकोण को मानव–जीवन की सच्ची प्रगति का प्रतीक कहते थे और इस विचारधारा को प्रगतिशील विचारधारा अथवा प्रगतिवाद के नाम से पुकारते थे। अतः इस युग को प्रगतिवादी युग कहा जाता है।

इस विचारधारा का सर्वाधिक प्रभाव कथा साहित्य पर पड़ा है। राहुल सांकृत्यायन, यशपाल, कातिचन्द्र सौनरिक्शा, रांगेय राघव, अमृतलाल नागर, उपेन्द्रनाथ अष्क, भगवतीचरण वर्मा, इलाचन्द जोशी आदि ने प्रगतिवादी उपन्यास तथा कहानियां लिखकर हिन्दी गद्य को समृद्ध किया। इस विचारधारा ने आलोचना को भी प्रभावित किया है। डॉ0 रामविलास शर्मा, प्रकाशचन्द्र गुप्त, शिवदान सिंह चौहान, चन्द्रवलीसिंह आदि प्रसिद्ध प्रगतिवादी समालोचक हैं। रामेश्वर शुक्ल अंचल, रामधारी सिंह दिनकर धर्मवीर भारती आदि ने प्रगतिवादी सम्बन्धी अपने मतों को स्पष्ट करने के लिए निबन्ध तथा स्वतन्त्र ग्रन्थ भी लिखे। इस युग के पुराने गद्यकारों में हजारी प्रसाद द्विवेदी, शान्तिप्रिय द्विवेदी, दिनकर, अज्ञेय, नगेन्द्र एवं भगवतीचरण वर्मा आदि हैं। नयी पीढ़ी में विद्यानिवास मिश्र, फणीश्वरनाथ रेणु एवं हरीशंकर परसाई हैं।

इस युग में संस्मरण, रेखाचित्र, रेडियो रूपक, साक्षात्कार आदि विधाएं विकसित हुई हैं।

पंचम विकास काल (स्वातंत्रयोत्तर युग सन् 1947 से वर्तमान तक)

स्वातंत्रयोत्तर युगीन गद्य के विकास को संक्षेप में लिखिए।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया गया। इस युग में हिन्दी में अनेक भाषाओं के शब्दों को ग्रहण किया गया। उसमें तकनीकी शब्दावली का निर्माण हुआ, जिससे हिन्दी गद्य साहित्य को प्रौढ़ता प्राप्त हुइ। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी में आगत विदेषी षबदों की हिन्दी अपनी प्रकृति के अनुकूल खपाया जाये। इस सम्बन्ध में डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा के विचार उल्लेखनीय हैं– अपनी भाषा में पाचन षक्ति का विकास करते–करते कहीं हम उसकी उद्भावन षक्ति का हास न करने लगे। वर्तमान समय क लेखकों को इस विषय में सदैव जागरुक रहना चाहिए।

आज गद्य की नवीनतम विधाओं, जैसे– रेडिया रूपक, नाटक, डायरी, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज, यत्रावृत्त, पत्र, लघुकथा, एकालाप एवं अभिनन्दन ग्रन्थ आदि का विकास हुआ है और अनेक लेखक लिख रहे हैं। आज हिन्दी का गद्य साहित्य पूर्णतः समृद्धि के शिखर पर सुशोभित है। निश्चय ही उसका भविष्य उज्जवल और आलोकमय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. तुलसीदास के अन्य परवर्ती (1600 से 1700 ई.)
2. अठारहवीं शताब्दी (1700 से 1800 ई.)
3. कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान
4. विक्ओरिया के शासन में हिन्दुस्तान
5. विविध अज्ञात कवि।